Q2. नियतिवाद एवं संभववाद के विचारों का अध्ययन प्रस्तुत करें।

→ भूगोल में कई प्रकार के द्वैतवाद प्रचलित हुए। जिसमें नियतिवाद एवं संभववाद भी है। द्वैतवाद का तात्पर्य किसी एक वस्तु पर दो स्वतंत्र उपागम द्वारा व्याख्या का प्रयास करना अथवा एक ही आधारभूत विषय के लिए अलग अलग विषय वस्तु का चयन करना है। कई भूगोल वेत्ताओं ने इसे द्वंध या द्वैत की संज्ञा दी है। द्वंध का अर्थ है विभाजन जबकि द्वैत का अर्थ दावे-प्रतिदावे से है। भूगोल में मुख्यतः पाँच प्रकार के द्वैतवाद विकसित हुए। जिसमें नियतिवाद व संभववाद सर्वप्रमुख है।

नियतिवाद :- नियतिवाद का तात्पर्य यह है कि भूगोल की विषय वस्तु नियति से संबद्ध है। इसमें मानव को प्रकृति का एक अंग माना गया। भूगोल में नियतिवाद उतना ही पुराना है जितना की स्वयं भूगोल विषय। भूगोल के प्रारंभिक चिंतक नियतिवादी थे। वे प्रकृति को ही श्रेष्ठ मानते थे। अतः उन्होंने प्रकृति से जुड़े वस्तुओं को ही प्राथमिकता दी। नियतिवादी चिंतन का ~~[illegible]~~ उद्भव भूमध्यसागरीय मान्यता के अन्तर्गत हुआ। उस समय के लेखकों की पुस्तकों में प्रकृति की सर्वोच्चता स्वीकार की गई है। प्राचिन काल में हिप्पोक्रेटस ने तथा मध्य युग में बॉडिन व मांटेस्क्यू ने नियतिवाद का समर्थन किया। रैटजेल को मानव भूगोल का जनक माना जाता है। लेकिन उनका दृढ़ विश्वास था कि मानव सर्वथा प्रकृति पर आश्रित रहता है। रैटजेल ने प्रकृति की तुलना पेड़ से की एवं मानव को एक पक्षी माना।

आधुनिक चिन्तकों में प्रमुख हम्बोल्ट एवं रिटर ने अपनी पुस्तक KOSMOS तथा EARDKUNDE में नियतिवाद का पूर्ण रूप से

समर्थन किया है। इन चिंतकों के अनुसार प्रकृति और मानव नियति के आधार स्तंभ का कार्य करते हैं। लेकिन मनुष्य स्वयं प्रकृति द्वारा नियंत्रित होता है। मनुष्य की हर क्रिया प्रकृति की उपज है। इसी प्रकार ब्रिटिश भूगोलवेत्ता BUCKLET ने अपनी पुस्तक "MINTRY IN ENGLAND" में मानवीय क्रियाकलापों पर वातावरण के प्रभाव को स्पष्ट किया है।

इनके अनुसार "NATURE CONTRIBUTES TOWARD THE ACCUMULATION AND DISTRIBUTATION OF WELTH" धन के उपार्जन एवं वितरण पर प्रकृति का प्रभाव पड़ता है। LEMOLIN नामक ब्रिटिश चिंतक ने तो यहाँ तक कहा है कि - 'SOCIETY IS FASHIONED BY ENVIROMENT'

अमरीकी भूगोलवेत्ताओं में डेविस, हटिंगटन तथा कुमारी सैम्पुल को नियतिवाद के प्रमुख समर्थकों में माना जाता है। डेविस एक भू-प्राकृतिक वैज्ञानिक थे जिन्होंने स्पष्ट लिखा कि प्रकृति की श्रेष्ठता निविवाद है। हटिंगटन ने भी वातावरणीय नियतिवाद में प्रकृति की श्रेष्ठता को स्वीकारा था।

कुमारी सैम्पुल के पुस्तक "INFLUENCES OF GEOGRAPHICAL ENVIRONMENT" (1911 ई०) को नियतिवाद के समर्थन में अंतिम आवाज माना जाता है। इस पुस्तक में उन्होंने यहाँ तक लिखा है कि - "MAN IS THE PRODUCT OF NATURE" अर्थात मनुष्य प्रकृति का उपज है। कुमारी सैम्पुल ने जब अपनी पुस्तक लिखी उस समय तक मानव जीवन पर औद्योगिक क्रांति का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ चुका था।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नियतिवाद के अनुसार मानव के अधिकांश क्रियाकलापों की व्याख्या प्राकृतिक वातावरण के प्रति

उसको अनुक्रिया से की जाती है।

संभववाद का अभ्युदय :- संभावनावाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसीसी इतिहासकार फेवर ने किया था। परन्तु बाद के वर्षों में यह चिन्तन भूगोल की विषय वस्तु बन गया। इस शब्द का जन्म और विकास फ्रांस में हुआ था। इसलिए इसे भूगोल की फ्रांसिसी विचारधारा भी कहते हैं। इस विचारधारा के जनक 'विडाल डी-ला-ब्लाश थे। ब्लाश ने बताया कि सामाजीक एवं सान्स्कृतिक विकास में प्रकृति की केन्द्रिय भूमिका एक सलाहकार से अधिक नहीं हो सकती है। यह विचारधारा मानती है कि मनुष्य सर्वोपरी है तथा मनुष्य अपनी योग्यता के बल पर प्रकृति को चुनौती देने में सक्षम है। इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य एक परिवर्तक है। और कुछ भी करने में सक्षम है। बशर्ते कि वह परिवर्तन के कार्य में क्रियाशील रहे।

ब्लाश के इस चिंतन का ब्रुंश, डिमांजियन, व डीमोर्टन द्वारा जबरदस्त समर्थन किया गया। लेकिन ब्रुन्श ने Robber economy की संज्ञा देते हुए संभववाद को सचेत किया कि प्रकृति से खिलवाड़ किया जा सकता है- परन्तु इस के प्रतिकुल परिणाम भी हो सकते हैं। भूगोल की इस फ्रांसिसी विचारधारा का समर्थन ब्रिटिश भूगोलवेत्ता मैकाइन्डर तथा अमरीकी भूगोलवेत्ता कार्ल सोवर, जिम्मरमैन व बोमैन ने भी किया। संभववादी चिंतकों ने तीन मुख्य तथ्यों पर बल दिया—

(A) मनुष्य अपनी अधिकतम संतुष्टी के लिए प्रकृति में परिवर्तन लाता है और उसका भी अध्ययन किया जाता है।

(B)

बोमेन ने कहा कि, " संसाधन होते नहीं बनते हैं।" अर्थात प्रकृति में कुछ भी संसाधन नहीं है। प्रकृति के सभी पदार्थ मनुष्य के प्रति तटस्थ हैं। मनुष्य अपनी उपयोगिता के आधार पर उसको प्रतिस्थापित करता है और इस प्रकार संसाधन की पहचान होती है।

जीमरमैन ने एक model प्रस्तुत किया है—

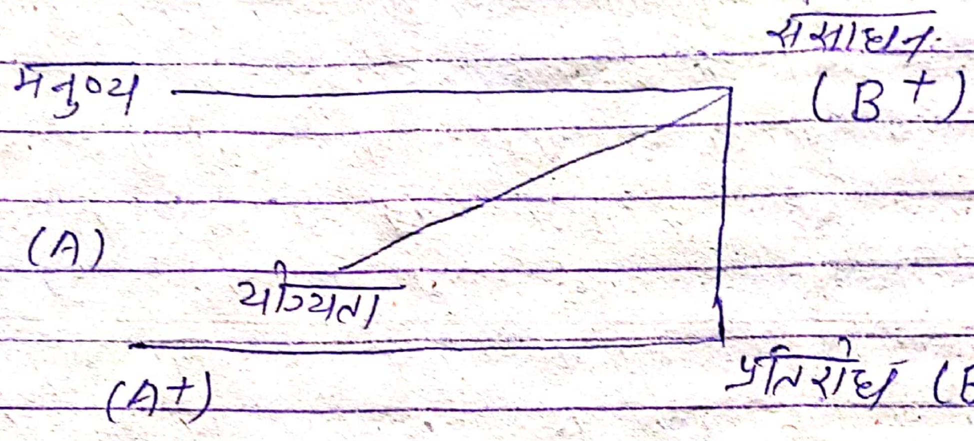

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सम्भववाद के अनुसार भौगोलिक अध्ययन में मानव श्रेष्ठता को प्रमुखता दी जाए। मैकाइन्डर ने तो यहां तक कह दिया कि, "मानव भूगोल ही सामान्य भूगोल है"।

दोनों विचारधाराओं के अध्ययन के बाद निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव को चाहिए कि वह प्रकृति की सुन्दरता को क्षति न पहुँचाएँ वरना वह स्वयं भी संकट में पड़ सकता है। जहाँ कहीं भी या जब भी मानव प्राकृतिक सीमाओं का अतिक्रमण या उल्लंघन करता है तो प्रकृति तत्काल उसे सुनामि, कैटरीना, रीटा, भूकंप, या विध्वंसक मौसमी परिवर्तन के रूप में अपने प्रभुत्व का अहसास करा देती है। अतः मनुष्य को प्रकृति के साथ समझौतावादी नीति अपना कर सदैव विकास पथ पर अग्रसर रहना चाहिए।